सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

हिन्दी में काव्य-साहित्य का विकास

हिन्दी पद्य की सामान्य प्रवृत्तियों तथा उसके साहित्य का सिंहावलोकन करने के लिए हमें उसके आदिकाल से वर्तमान काल तक रचे गये समग्र पद्य साहित्य पर दृष्टिपात करना होगा। आदिकाल का अपर अभिधान वीरगाथा काल है। इस युग में, जैसा कि इसके नामकरण से ही ज्ञात होता है, वीरगाथाओं का प्रणयन हुआ। या यों कहिए कि इसका नामकरण ही इस युग की प्रमुखतम प्रवृत्ति वीरगाथा प्रणयन के आधार पर हुआ। इन वीरगाथाओं की प्रामाणिकता भी मनीषियों द्वारा संदिग्ध बताई गई है। साथ ही इनमें ऐतिहासिक पात्र होते हुए भी कल्पना का बाहुल्य है। फलतः ऐतिहासिकता का अभाव देखने को मिलता है। डिंगल भाषा का प्रयोग, युद्धों का सजीव वर्णन, 'युद्धों का कारण नायिका' की कल्पना, वीर एवं शृंगार रस की प्रधानता, संकुचित राष्ट्रीयता, रासो ग्रन्थों की रचना, प्रबन्ध एवं मुक्तक शैली का प्रयोग, छन्दों का विविधमुखी प्रयोग आदि इस काल की प्रमुखतम सामान्य प्रवृत्तियाँ रहीं। इस युग के प्रमुखतः 4 काव्य उपलब्ध हुए हैं—दलपति विजय कृत खुमान रासो, नरपति नाल्ह कृत बीसल देव रासो, जगनिक रचित परमाल रासो (आल्हा खण्ड) तथा चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो। इनमें पृथ्वीराज रासो इस युग की प्रसिद्धतम रचना है, लेकिन इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता अभी भी संदिग्ध बनी हुई है। इसके अतिरिक्त इस युग की कतिपय रचनाएँ अपभ्रंश में भी मिलती हैं।

आदिकाल के बाद मध्यकाल आता है। बहुत विस्तृत होने के कारण मनीषियों द्वारा इसके दो विभाग किये गये हैं—पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल, जो कि अपनी प्रमुखतम विशेषताओं के कारण भक्तिकाल और रीतिकाल के नामों से अभिहित किये गये। यहाँ सर्वप्रथम भक्तिकाल की चर्चा की जायेगी। यह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण-युग कहलाता है। इसमें जितना सर्वांगीण साहित्य रचा गया उतना किसी भी काल में नहीं मिलता है। भक्तिकाल की पृष्ठभूमि में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का विशेष महत्त्व है। उन दिनों विदेशी आक्रमणकारी यवनों का साम्राज्य स्थापित हो रहा था। हिन्दी जनता त्राहि-त्राहि मचा रही थी। भारतीय राज्यों के छिन्न-भिन्न हो जाने के कारण कविजन निराश्रित हो गये। अब उनके पास हरि-गुणगान के अतिरिक्त रह ही क्या गया था ? अतः देश की परिस्थितियों में परिवर्तन लाने तथा आत्मकल्याण की भावना को सामने रखकर वे अपने-अपने आराध्यदेव की आराधना में जुट गये। इससे पूर्व देश में आन्दोलन भी उठ खड़े हुए थे। शंकर ने प्रच्छन्न बौद्ध बनकर बौद्ध-धर्म की जड़ें खोद डाली थीं। हिन्दू धर्म पुनः जीवित-सा हो उठा था।

Scanned with CamScanner

रामानुज ने अपना भक्ति-स्रोत प्रवाहित कर लिया था, लेकिन इस क्षेत्र में भी साम्प्रदायिकता का इतना बाहुल्य हो गया था कि एक सम्प्रदाय वाले दूसरे को देख तक नहीं सकते थे। "हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छेत् जैन-मन्दिरम्" वाली उक्ति इस बात की प्रबलतम समर्थक है। इन भक्ति कवियों में दो प्रकार के कवि मिले—एक, 'सगुणोपासक' और दूसरे, 'निर्गुणोपासक'। बाद में भक्ति की इन दोनों धाराओं की भी दो-दो अलग-अलग प्रशाखाएँ हो गईं। निर्गुण भक्ति में ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा एवं सगुण में राम-भक्ति शाखा तथा कृष्ण-भक्ति शाखा। इनकी अपनी अलग-अलग विशेषताएँ थीं, जो संक्षेप में निम्न प्रकार हैं—

ज्ञानाश्रयी शाखा, अथवा सन्तकाव्य धारा, के जाज्वल्यमान रत्न कबीरदास जी हैं। इन्होंने ब्रह्म की प्राप्ति ज्ञान के आधार पर ही सुलभ बताई। इस धारा की प्रमुखता आध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति है। इस अभिव्यक्ति में अनुभूतिपक्ष का प्राबल्य है; दार्शनिक शुष्कता नहीं। अतः काव्य सरस एवं अलंकारविहीन रचा गया। फलतः यह जनता का गलहार बनकर रह गया। निर्गुण ब्रह्म में विश्वास वैदिककालीन, बहुदेववाद एवं पुराणकालीन अवतारवाद का विरोध, सद्गुरु का महत्त्व, जाति-पाँति का विरोध, धार्मिक रूढ़ियों एवं आडम्बरों का खण्डन, रहस्यवाद की अभिव्यक्ति, भगवद्-भजन एवं नाम-स्मरण, शृंगार वर्णन एवं विरह की मार्मिक उक्तियाँ, लोकसंग्रह की भावना, नारी को माया की मान्यता, कंचन और कामिनी का विरोध, माया से सावधानी, उलटवासियों एवं रूपकों का प्रयोग आदि इस काव्यधारा की सामान्य प्रवृत्तियाँ हैं। गुरु नानक कृत ग्रन्थ साहब, नामदेव कृत पदावली, त्रिलोचन कृत पदावली, रविदास की बानी, कबीरदास कृत बीजक, धरमदास कृत सुख-विधान, मलूकदास कृत ज्ञान बोध, दादूदयाल कृत हरडवानी, वीरभान कृत पोथी, धरणीदास कृत प्रेम प्रवास, लालदास कृत लालदास की बानी, सुन्दरदास की बानी, सुन्दर विलास, गुलाब साहब का बारहमासा, चरनदास कृत भक्ति-पदारथ, बालकृष्ण कृत ध्यान मंजरी तथा नेह प्रकाश, अक्षर अनन्य कृत दुर्गा सप्तशती, भीखा साहब कृत रामजहाज, गरीबदास कृत बानी, जगजीवनदास कृत ज्ञान प्रकाश, दयाबाई कृत दयाबोध, तुलसी साहब कृत घर रामायण आदि इस काव्यधारा की प्रमुखतम रचनाएँ हैं। पीपा, धना हरिदास तथा सहजोबाई आदि कवियों की फुटकर रचनाएँ भी देखने को मिलती हैं।

प्रेमाश्रयी शाखा के अन्तर्गत सूफी प्रेमकाव्य-परम्परा के दर्शन होते हैं। ये कवि सूफी थे। ये प्रेम के बल पर भगवान को प्राप्त करना चाहते थे। अतः कबीर की भाँति आत्मा को स्त्री तथा परमात्मा को पुरुष न मानकर इन्होंने परमात्मा को स्त्री तथा आत्मा को पुरुष मानकर रहस्यवाद का निरूपण किया। इस धारा के चार सम्प्रदाय थे—चिश्ती, सुहारावर्दी, कादरी और नक्शबन्दी, लेकिन इनके मूलभूत सिद्धान्त एक ही थे। ये ईश्वर की एकता और सर्वोपरिता में समान हैं। केवल आचारात्मक दृष्टिकोण की भिन्नता मिलती है। ईश्वर का गुणानुवाद कहीं जोर से, कहीं मौन होकर और कहीं गा-गा कर किया जाता है। प्रबन्ध-कल्पना, भावों की सफल व्यंजना, लोक-पक्ष एवं हिन्दू संस्कृति का चित्रण, शैतान की कल्पना, खण्डन के स्थान पर मण्डन की प्रवृत्ति का प्रश्रय, नारी-चित्रण, प्रेम कहानियों की मूल प्रेरणा, शृंगार रस की प्रधानता, प्रतीक विधान, महाकाव्यों का प्रणयन, तत्कालीन प्रचलित छन्दों (दोहा, सोरठा, अर्धालियों) का प्रयोग, अलंकारों का समुचित प्रयोग आदि इस शाखा की प्रमुखतम प्रवृत्तियाँ थीं। मुल्ला दाऊद कृत चंदायन, कुतबन कृत बगावत, रंजन कृत प्रेमवनजीव निरंजन, मंझन कृत मधुमालती, उसमान कृत चित्रावली, जमाल पच्चीसी, जान कृत रत्नावली, लेख नवी कृत ज्ञानदीप, नूरमुहम्मद कृत अनुराग बाँसुरी, कासिमशाह कृत हंस जवाहर, जायसी कृत आखिरी कलाम, पद्मावत

Scanned with CamScanner

तथा अखरावट इस शाखा की प्रमुख रचनाएँ हैं। इनमें जायसी कृत पद्मावत तो उत्कृष्टतम रचना कही जाएगी और जायसी सर्वोत्कृष्ट कवि माने जाते हैं।

सगुण भक्ति धारा के अन्तर्गत हम सर्वप्रथम राम-शक्ति शाखा की काव्य-परम्परा का सिंहावलोकन करेंगे। वैदिक धर्म कर्मकाण्ड प्रधान था। अतः बौद्धों ने इसका विरोध किया। उसी समय वैष्णव धर्म भी वैदिकी हिंसा के विरोध में उठ खड़ा हुआ। इस धर्म के अनेक सम्प्रदाय हैं जिनमें श्री रामानुज, निम्बार्क, वल्लभ मध्व तथा रामानन्दी प्रमुख हैं। इस शाखा के कवियों के अग्रणी श्री रामानन्द जी थे। इनमें राम भक्ति की प्रधानता है। इस शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्न हैं—

ईश्वर के सगुण रूप की उपासना, अवतारवाद के सिद्धान्त की स्वीकृति एवं मान्यता, भगवान की लीला-रहस्य, भगवान की रूपोपासना, शंकर के अद्वैतवाद का विरोध, रामायण और श्रीमद्भागवत की छाप भक्ति-क्षेत्र में जाति भेद की अमान्यता, गुरु की महत्ता, नवधा भक्ति के आधार पर भगवद् उपासना एवं लोक जीवन का सम्यक् चित्रण आदि। इसके अतिरिक्त राम की विष्णु के अवतार के रूप में मान्यता, लोक-संग्रह एवं समन्वय की भावना, भक्ति का स्वरूप—सेवक-सेव्य भाव, विविध, छन्दों एवं अलंकारों का प्रयोग, विविध रसों का समावेश, चरित्र-चित्रण, विविध काव्य-शैलियों का प्रयोग, मधुर रस का समावेश, प्रमुखतः अवधी भाषा का प्रयोग, यत्र-तत्र अन्य भाषाओं का प्रयोग आदि अन्य प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती हैं।

स्वामी रामानन्द कृत रामरक्षा स्तोत्र; भागवतदास कृत भेद भास्कर, चन्द्रकवि कृत हितोपदेश, विष्णुदास कृत वाल्मीकि रामायण का हिन्दी रूपान्तर, ईश्वरदास कृत भरत-मिलाप तथा अंगद पैज, मुनि लावराय कृत रावण-मन्दोदरी संवाद, जिनदास कृत रामचरित, ब्रह्म जिनदास कृत हनुमन्त-राज, ब्रह्मराय मल्ल कृत हनुमन्तगामी कथा, सुन्दरदास कृत हनुमान चरित्र, अग्रदास कृत रामाष्टयाम तथा रामध्यान मञ्जरी, गोस्वामी तुलसीदास कृत राम गीतावली, कृष्ण गीतावली, रामचरितमानस, विनयपत्रिका, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, दोहावली, सतसई, बाहुक, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा तथा बरवै इस शाखा के प्रमुख ग्रन्थ हैं। इनमें रामचरितमानस की इस शाखा में ही नहीं अपितु समग्र हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट स्थान है। तुलसीदास जी इस शाखा के मूर्धन्य कवि कहे जाते हैं। आगे चलकर कुछ रीतिकालीन व आधुनिक कवियों ने भी रामभक्ति विषयक काव्य की रचना की जो इसी शाखा के अन्तर्गत है। रामचरितमानस तो सम्पूर्ण उत्तरी भारत की जनता का धार्मिक एवं पूज्य ग्रन्थ है।

सन्त, सूफियों एवं रामानन्दियों की भाँति कुछ और अन्य सम्प्रदाय शंकर के मायावाद का खण्डन कर भक्ति की स्थापना करने हेतु उठ खड़े हुए। ये सम्प्रदाय रामानुजाचार्य का श्रीसम्प्रदाय, विष्णु स्वामी का रुद्र सम्प्रदाय, निम्बार्काचार्य का निम्बार्क सम्प्रदाय, मध्य का द्वैतवादी मध्व सम्प्रदाय, चैतन्य महाप्रभु का गौड़ीय अथवा चैतन्य सम्प्रदाय, हित हरिवंश का राधावल्लभी सम्प्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय या सखी सम्प्रदाय हैं। श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन, रस-चित्रण, विषय-वस्तु की मौलिक उद्भावना, भक्ति-भावना के अन्तर्गत सख्य भक्ति, कान्ताभाव, स्वकीया तथा परकीया प्रेम की अभिव्यक्ति, चरित्र-चित्रण, प्रकृति-चित्रण, रीति तत्त्व का समावेश, गीति-शैली में गीत पदों का प्रयोग, ब्रजभाषा में सफल अभिव्यक्ति, अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग आदि इस काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ रहीं। सूरदासजी इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि तथा उनके द्वारा रचित सूरसागर सर्वोत्कृष्ट काव्य-ग्रन्थ है। इनकी दो अन्य रचनाएँ साहित्य लहरी एवं सूरसारावली हैं। इस शाखा के कवियों में अष्टछाप के कवियों का प्रमुख स्थान है और इन अष्टछाप के कवियों में भी महाकवि सूर मूर्धन्य हैं। ये कवि सूरदास,

Scanned with CamScanner

परमानन्ददास, कुम्भनदास, कृष्णदास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी हैं। इनमें कुछ की स्वतन्त्र रचनाएँ मिलती हैं और कुछ के केवल फुटकर पद मात्र ही मिलते हैं।

इस युग की प्रमुखतम रचनाएँ परमानन्द सागर, चतुर्भुजदास कृत भक्ति-प्रताप, नन्ददास कृत रासपंचाध्यायी एवं भ्रमरगीत, वृहत् पदसंग्रह, गीत-गोविन्द की टीका, नरसी जी का माहरा, छीलह कृत पंच सहेली, लालदास कृत हरि चरित, गदाधर भट्ट एवं सूरदास मदनमोहन के स्फुट पद, नरोत्तमदास कृत सुदामा चरित्र, हरिराय कृत वर्षोत्सव, गोविन्ददास कृत एकान्त पद, हरियाली के पद, हित चौरासी, श्री भट्ट कृत युगल शतक, व्यास कृत व्यास की बानी, निपट निरंजन के पद, लक्ष्मी नारायण कृत प्रेम-तरंगिनी, बलभद्र मिश्र कृत हनुमन्नाटक, मोहन कृत केलि कल्लोल, रसखान कृत प्रेम वाटिका तथा सुजान रसखान, भीष्म कृत श्रीमद्भागवत, ध्रुवदास कृत सिद्धान्त विचार, भक्ति नामावली, चतुरदास कृत भगवद्गीता, धर्मदास कृत महाभारत, सुखदेव मिश्र कृत आध्यात्म प्रकाश, रसिकदास कृत पूजा विलास, हरिवल्लभ कृत भगवद्गीता, जगतानन्द कृत ब्रज परिक्रमा, जयतराम कृत भगवद्गीता की पद्यबद्ध टीका, रहीम कृत रास पंचाध्यायी, नरहरि कृत रुक्मिणी मंगल, गंग के पद आदि हैं।

अब आता है—रीतिकाल। इस युग में रीति-ग्रन्थों का प्रणयन बाहुल्य से हुआ। इनमें दो प्रकार की रचनाएँ समाविष्ट हैं—लक्ष्य ग्रन्थ एवं लक्षण ग्रन्थ। शृंगारिकता इस युग की प्रमुखतम विशेषता है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रवृत्तियाँ आलंकारिकता (चमत्कार प्रदर्शन), भक्ति एवं नीति सूक्तियों की रचना, मुक्तक काव्य शैली का प्रयोग, ब्रजभाषा का प्राधान्य, लक्षण ग्रन्थों का प्रणयन, वीर रस की कविताएँ, प्रकृतिगत आलम्बन स्वरूप, अभिव्यंजना पद्धति, नारी-चित्रण, मनोवैज्ञानिक चित्रण, प्रतियोगिता की भावना, पराश्रयिता की भावना, विविधमुखी साहित्य, वर्णन-शैली तथा रीति कवि का व्यक्तित्व आदि हैं।

महाकवि केशव, बिहारी, देव एवं चिन्तामणि इस युग के प्रमुख कवि हैं। प्रमुख ग्रन्थ चिन्तामणि त्रिपाठी की रामायन, महाराज जसवन्तसिंह का सिद्धान्त बोध, बिहारी सतसई, मण्डन कृत जनक पच्चीस, सुखदेव मिश्र कृत आध्यात्मक प्रकाश, देव कृत ब्रह्मदर्शन पच्चीसी, कृष्ण कवि की बिहारी सतसई की टीका, भिखारीदास कृत विष्णुपुराण भाषा, तोषनिधि का विमय शतक, सोमनाथ की कृष्ण लीलावती पंचाध्यायी, मनीराम मिश्र कृत आनन्द मंगल, पद्माकर भट्ट रचित रास रसायन, ग्वाल कवि का भक्तिभावन, प्रतापसिंह जंगल का नखशिख, रसिक गोविन्द कृत रामायण सूचनिका तथा समय प्रबन्ध, छात्रसिंह कृत विजय मुक्तावली, श्रीधर के कृष्ण लीला के पद, घनानन्द कृत प्रेम पत्रिका आदि विविध ग्रन्थ, नागरीदास की रामचरित माला, बख्शी हंसराज कृत स्नेह सागर, जनकराज किशोरीशरण कृत सीमाराम सिद्धान्त मुक्तावली, सरजूमल पण्डित की जैमिनी पुराण भाषा, भगवंतराय खींची रचित हनुमत पच्चीसी, ब्रजवासीदास का ब्रज विलास, गिरिधरदास कृत जरासंध वध आदि हैं। आलम, बोधा, ठाकुर, वृन्द, लाल एवं सूदन आदि अन्य कवि हैं।

अन्त में आता है—आधुनिक काल। इस युग की प्रमुखतम विधा गद्य है, लेकिन पद्य की रचना भी पर्याप्त रूप में देखने को मिलती है। आधुनिक हिन्दी कविता के प्रवृत्यात्मक विकास को दृष्टिकोण में रखते हुए कविता का तीन प्रमुख युगों में विभाजन किया गया है—(1) पूर्व छायावाद युग (जिसके अन्तर्गत भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग आते हैं), (2) छायावाद युग, (3) उत्तर छायावाद युग। यह विभाजन छायावाद के आधार पर है। छायावाद पूर्व छायावाद कालीन प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया मात्र है। पूर्व छायावाद युग के भी दो प्रभाग हैं—भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग।

भारतेन्दु काल हिन्दी कविता का सन्धि काल है। इसमें नवीन की उद्भावना तथा प्राचीन का संरक्षण है। यह बात भाव एवं कलाक्षेत्र, दोनों ही दृष्टियों से मिलती है। साहित्यकार सामान्यतः

Scanned with CamScanner

समाज-सुधारक, प्रचारक तथा पत्रकार थे। साथ ही उन्होंने रीतिकालीन परम्पराओं का परित्याग नहीं किया। इस युग की भावगत एवं शैलीगत प्रवृत्तियाँ देशभक्ति, प्राचीनता तथा नवीनता का समन्वय, जन-जीवन का चित्रण, बाह्य प्रकृति-वर्णन की अपेक्षा नर प्रकृति के वर्णन में प्रवृत्त होना, इतिवृत्तात्मकता, भाषा में ब्रजभाषा का प्रयोग, प्राचीन एवं लोक प्रचलित छन्दों का प्रयोग, कलात्मक अभिव्यक्ति का अभाव आदि हैं। प्रमुख कवि भारतेन्दु बाबू, प्रतापनारायण मिश्र, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध और प्रेमघन आदि हैं।

द्विवेदी-युग में भारतेन्दु-युग की अपेक्षा अधिक विकास दृष्टिगोचर होता है। इस युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, कामताप्रसाद गुप्त, गौरीशंकर मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, रामचरित उपाध्याय, राय देवीप्रसाद पूर्ण, नाथूराम शंकर, जगन्नाथदास रत्नाकर, गंगाप्रसाद सनेही, सत्यनारायण कविरत्न, रामनरेश त्रिपाठी आदि हैं। इनमें श्रीधर पाठक, हरिऔध, त्रिपाठी और गुप्त छायावादी युग की आदि कड़ी हैं। हरिऔध तो भारतेन्दु, द्विवेदी एवं छायावादी युग, तीनों की कड़ी कहे जा सकते हैं।

इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ देशभक्ति की कविता, धार्मिक कविता को प्रश्रय देकर उसमें नवीनता का समावेश, सामाजिकता की भावना, बँगला की कोमलकान्त पदावली का परित्याग कर मराठी की इतिवृत्तात्मक शैली का प्रयोग, प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण, प्रकृति का यथातथ्य वर्णन, कालानुसरण की क्षमता, बौद्धिकता की प्रधानता, देश का अतीत गौरव और संस्कृति का गान, नवीन तथा साधारण विषयों का समावेश, देशी-विदेशी भाषाओं के अनुवाद कार्य का प्रश्रय, काव्य के रूपों में अनेकता, संस्कृत, हिन्दी और उर्दू के विविध छन्दों का प्रयोग, भाषा-संस्कार, पौराणिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों का राष्ट्रीय आदर्श भावना की दृष्टि से उपन्यस्तीकरण, रीतिकालीन शृंगार-भावना का पूर्णतः बहिष्कार, नैतिकता का साम्राज्य आदि हैं। इस युग में छायावादी प्रवृत्ति तथा स्वच्छन्दतावादी कविता के पूर्व चिन्ह देखने को मिलते हैं।

आधुनिक काल में छायावादी काव्य का प्रमुखतम स्थान है। छायावाद क्या है ? इस पर मनीषियों ने अपनी-अपनी अलग-अलग कसौटियाँ प्रस्तुत की हैं। छायावादी शैली अंग्रेजी एवं बँगला साहित्य से अनुप्राणित है। पूर्व छायावादी युग में भाव-पक्ष शिथिल-सा हो गया था अतः उसको प्रश्रय देने के लिए इस शैली का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कोई छायावाद को आध्यात्मिकता से अनुप्राणित मानते हैं, कोई इसे पद्धति विशेष कहते हैं, कोई प्रकृति में मानवीकरण बताते हैं, दूसरे लोग दार्शनिक अनुभूति बताते हैं। किसी की दृष्टि में एक भावात्मक दृष्टिकोण है। कुछ लोग इसे स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह बताते हैं। इधर लोगों की धारणा है कि यह प्रेम और सौन्दर्य का अंकन करने वाला गीति काव्य है। कुछ इसका मूलाधार सर्वात्मवाद मानते हैं। लेकिन छायावाद क्या है, इसके लिए इसकी प्रवृत्तियों पर दृष्टिपात करके ही कुछ कहा जा सकता है। इसका उद्‌भव राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों के कारण ही हुआ।

व्यक्तिवाद का प्राधान्य, प्रकृति चित्रण का प्राधान्य, नारी सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण, रहस्यवाद या अलौकिक प्रेम चित्रण, रहस्य-भावना एवं स्वतन्त्रता प्रेम, स्वच्छन्दतावाद, वेदना और निराशा, मानवतावाद, आदर्शवाद, युगीन प्रभाव, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मक एवं लाक्षणिक पदावली, संगीतात्मकता, अलंकार-विज्ञान, कला—कला के लिए, मूर्त का अमूर्त विधान, अमूर्त का मूर्त विधान, विशेषण विपर्यय, मानवीकरण आदि इस युग की प्रमुखतम प्रवृत्तियाँ हैं।

Scanned with CamScanner

इन प्रवृत्तियों को आधार बनाकर डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने छायावाद को इस प्रकार निबद्ध किया है—"भारतीय काव्य-परम्परा में हिन्दी कविता की छायावादी धारा अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया में प्रस्फुटित एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण, एक विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष शैली है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम के त्याग से लौकिक अनुभूतियों का चित्रण है, जिसमें प्रकृति का मानवीकरण है, वेदना की निवृत्ति है, सौन्दर्य का चित्रण है, गीति तत्त्वों की प्रमुखता है और जिसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्वसन्निहत हैं।"

महाकवि जयशंकर प्रसाद प्रणीत चित्राधार, कानन कुसुम, महाराणा का महत्त्व, करुणामय, प्रेम पथिक, आँसू, लहर, कामायनी; प्रकृति कवि सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, युगान्तर, उत्तरा, रजत शिखर, शिल्पी और प्रतिभा; सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला कृत परिमल, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना और आराधना; महादेवी वर्मा रचित नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा; रामकुमार वर्मा प्रणीत अंजलि, रूपराशि, चित्तौड़ की चिता, अभिशाप, निशीथ, चित्ररेखा, संकेत; नरेन्द्र शर्मा कृत शूल-फूल, कर्ण-फूल, पलाश वन; रामेश्वर शुक्ल अंचल कृत मधुकर, मधूलिका, अपराजिता, किरण वेला और करील, लाल चूनर; बालकृष्ण शर्मा नवीन रचित रूप कुंकुम, अपलक, रश्मिरेखा क्वासि, विनोबा स्तवन; उदयशंकर भट्ट रचित तक्षशिला, मानसी, राका; अमृतलाल नागर का अमृत और विष; दिनकर प्रणीत रेणुका, रसवन्ती, द्वन्द्व गीत, हुँकार, धूप छाँह, सामधेनी बापू, धूप और धुआँ और इतिहास के आँसू, प्रण, भंग, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, नील कुसुम आदि इस युग की प्रमुख रचनाएँ हैं।

अब आता है—उत्तर छायावाद युग। इसमें काव्य की अनेक धाराएँ देखने को मिलती हैं—प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, बिम्बवाद आदि। इनकी प्रवृत्तियों का क्रमशः विवरण निम्न प्रकार है—

प्रगतिवाद—इसका मूल आधार कार्ल मार्क्सवाद है। इसके तीन रूप हैं—(1) द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद, (2) मूल्य वृद्धि का सिद्धान्त तथा, (3) मूल सभ्यता के विकास की व्याख्या। अर्थव्यवस्था के आधार पर विश्व सभ्यता में दो वर्ग देखने को मिलते हैं—एक, शोषक वर्ग और दूसरा, शोषित वर्ग। बस, इसी शोषित वर्ग का शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह ही प्रगतिवाद है। यही साम्यवादी विचारधारा है; साम्यवाद का केन्द्र बिन्दु श्रमिक है।

प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ—रूढ़ि विरोध, शोषितों का करुण गान, शोषकों के प्रति घृणा व रोष, क्रान्ति की भावना, मार्क्स तथा रूस का गुणगान, मानवतावाद, वेदना और निराशा, नारी-चित्रण, सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण, सामाजिक समस्याओं का चित्रण, कला सम्बन्धी मान्यता, कलात्मकता का बलिदान, छायावाद की संस्कृतिमयी पदावली, क्लिष्ट प्रतीकात्मकता और लाक्षणिक योजना का विरोध, भावानुसारणी भाषा, मुक्तक अतुकान्त द्वन्द्व एवं लोक गीतों का प्रयोग, फलतः संगीतात्मकता का अभाव, नवीन उपमान, रूपक एवं प्रतीकों का निर्धारण आदि हैं।

प्रगतिवादी प्रमुख कवि डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. रामविलास शर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, गोपालशरण सिंह, सुभद्राकुमारी चौहान आदि हैं।

प्रयोगवाद या नयी कविता को डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इस प्रकार निबद्ध किया है—"प्रारम्भ में जब कवियों का दृष्टिकोण एवं लक्ष्य स्पष्ट नहीं था, नवीनता की खोज के लिए केवल प्रयोग की घोषणा की गई थी तो इसे प्रयोगवाद कहा गया।" संक्षेप में यह प्रगतिवाद का ही परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप

Scanned with CamScanner

है। नलिन विलोचन शर्मा ने इसकी उद्भावना की। लक्ष्मीकान्त वर्मा एवं जगदीश गुप्त ने इसे एक नया अपर अभिधान नयी कविता दे डाला। वैसे प्रयोगवाद के मूल प्रवर्तक अज्ञेयजी हैं। अज्ञेयजी के शब्दों में—"प्रयोगशाली कविता में नये सत्यों तथा नयी यथार्थताओं का जीवित बोध भी है। उन सत्यों के साथ नये रागात्मक सम्बन्ध भी और उनको पाठक या सहृदय तक पहुँचाने यानी साधारणीकरण की शक्ति है।" डॉ. जगदीश गुप्त इसे नयी कविता का अभिधान देते हुए लिखते हैं—"वह नयी कविता उन प्रबुद्ध विवेकशील आस्वादकों को लक्षित करके लिखी जा रही है जिनकी मानसिक अवस्था और बौद्धिक चेतना नये कवि के समान है—बहुत अंशों में कविता की प्रगति ऐसे प्रबुद्ध भावुक वर्ग पर आश्रित रहती है।" डॉ. गणपतिचन्द गुप्त ने इसे और भी मार्मिक ढंग से लिखा है—"नयी कविता, नये समाज के नये मान की नयी प्रवृत्तियों की नयी अभिव्यक्ति, नयी शब्दावली में है, जो पाठकों के नये दिमाग पर नये ढंग से नया प्रवाह उत्पन्न करती है।" नयी कविता का लक्ष्य नवीनता, मुक्त यथार्थवाद, बौद्धिकता एवं लाक्षणिकता है।

इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ—घोर अहंनिष्ठ व्यक्तिवाद, अति नग्न यथार्थवाद, निराशावाद, अति बौद्धिकता, उपमानों की नवीनता, विषय-परिधि, मुक्तक छन्दों का प्रयोग, भाषा में व्याकरण-सम्मत रूपों की अवहेलना आदि हैं।

इस काव्यधारा को विकासक्रम से दो भागों में बाँटा गया है—(1) प्रयोग काल (1943-53), (2) विकास काल (1953 से अब तक)।

(1) प्रयोग काल—सन् 1943 में अज्ञेयजी का प्रथम तारसप्तक प्रकाशित हुआ जिसके कवि श्री अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर और डा. रामविलास शर्मा हैं। सन् 1951 में दूसरा तारसप्तक प्रकाशित हुआ जिसमें भवानी शंकर मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश कुमार मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती की कविताएँ संग्रहीत हैं।

(2) विकास काल—सन् 1954 में डॉ. जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी ने प्रयोगवादी कविताओं का वार्षिक संग्रह 'नयी कविता' के नाम से निकाला। तभी से प्रयोगवादी कविता का नाम 'नयी कविता' पड़ गया। इसमें तारसप्तक परम्परा के सभी कवि तो हैं ही; इसके अतिरिक्त चन्द्र कुँवर, राजेन्द्र यादव, सूर्यप्रताप, केदारनाथ सिंह आदि भी हैं। यह निश्चित नहीं है कि तारसप्तक की परम्परा के सभी कवि प्रयोगवादी ही हों। डॉ. शर्मा और भवानी प्रसाद मिश्र पर प्रगतिवाद का पर्याप्त प्रभाव है।

प्रयोगवाद या नयी कविता के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के काव्य संग्रह—भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षणभर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनु रौंदे हुए थे, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार; गिरिजा कुमार माथुर के काव्य-संग्रह—मंजीरगाशा और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले; धर्मवीर भारतीय की रचनाएँ कनुप्रिया, ठण्डा लोहा, सात गीत वर्ष, अन्धा युग; भारत भूषण अग्रवाल की रचनाएँ छवि के बन्धन, जागते रहो, मुक्ति मार्ग; भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संग्रह गीत फरोश; शकुन्तला माथुर की सुहाग वेला तथा कूड़े से भरी गाड़ी आदि हैं। नयी कविता के अन्य कवि विजय देव नारायण, कुंवरनारायण, जगदीश गुप्त, दुष्यन्त कुमार, केदारनाथ सिंह, रमेश कुन्तल मेघ, हरिनारायण व्यास, जगदीश शर्मा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

बाद में इसी धारा में एक 'बिम्बवादी' धारा फूट पड़ी; जो प्रवृत्यात्मक दृष्टि से इससे भिन्न न होकर इसी के अन्तर्गत आती है।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाई जाने वाली कविताओं का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए—

1. संकलित कविताओं के रस और सौन्दर्य का आस्वादन छात्र सहज रूप से कर सकें। इसमें अध्यापक की थोड़ी ही सहायता की आवश्यकता हो।

2. हिन्दी के प्रमुख प्राचीन और नवीन कवियों और काव्य-धाराओं का परिचय दे सकें।

3. संकलित कवियों की यथासम्भव प्रतिनिधि रचनाएँ हों।

4. खड़ी बोली के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य साहित्यिक बोलियों का भी प्रतिनिधित्व करें।

5. छात्रों के चरित्र को उदात्त बनाने वाली हों।

6. विभिन्न रसों, अलंकारों, छंदों और काव्य-शैलियों का परिचय दे सकें।

7. छात्रों की जीवन-दृष्टि को विशाल और उनकी अनुभूति और संवेदनशीलता को विस्तृत और गहरा बना सकें।

8. उनमें सृजनशीलता का विकास करें।

9. कुछ अपवादों को छोड़कर, आकार में इस प्रकार की हों कि उन्हें एक या दो पीरियड में पढ़ाया जा सके।

10. कविताओं के कुछ प्रमुख विषय निम्नलिखित हो सकते हैं—

- नीति
- देशप्रेम
- भक्ति
- जीवन-दर्शन

Scanned with CamScanner

प्रकृति सौन्दर्य
वीरता
हास्य-विनोद
प्रेरणा
नर-नारी समानता
छोटे परिवार का प्रतिमान
संयत शृंगार
रहस्यवाद
हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर
भक्ति
पर्यावरण संरक्षण

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

कविता की रसात्मकता

साहित्य के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को ही कविता कहा है। 'काव्य प्रकाश' के रचयिता आचार्य मम्मट के अनुसार विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भावों द्वारा व्यक्त स्थायीभाव रस कहलाता है। भाव ही रस का आधार है। मन के विकार भाव कहलाते हैं। भाव का आश्रय हृदय होता है। ये स्थायी भाव के रूप में, वासना के रूप में मानव-हृदय में सदा विद्यमान रहते हैं। भाव के दो रूप हैं—(1) स्थायी भाव और (2) संचारी भाव। प्रत्येक स्थायी भाव का एक निर्धारित रस है। नीचे स्थायी भाव व निर्धारित रस का उल्लेख किया जा रहा है—

रस	स्थायी भाव
(1) शृंगार	(1) रति या प्रेम
(2) हास्य	(2) हँसी
(3) करुणा	(3) शोक
(4) वीर	(4) उत्साह
(5) रौद्र	(5) क्रोध
(6) भयानक	(6) भय
(7) वीभत्स	(7) जुगुप्सा (घृणा)
(8) अद्‌भुत	(8) आश्चर्य
(9) शांत	(9) निर्वेद (वैराग्य)
(10) वात्सल्य	(10) अपत्य स्नेह
(11) भक्ति	(11) भक्ति (ईश अनुराग)

साहित्य में नवरस की बात की जाती है। शांत रस में वात्सल्य और भक्ति समाहित हैं। किन्तु कुछ आचार्यों के अनुसार वात्सल्य और शांत अलग रस हैं और उनके स्थायी भाव भी अलग हैं।

संचारी भाव का दूसरा नाम व्यभिचारी भाव भी है। ये स्थायी भाव के साथी हैं। स्थायी भाव यदि सरोवर का जल है तो संचारी भाव उसकी तरंगें हैं जो शीघ्र उठकर उसी में विलीन हो जाती हैं। इनकी संख्या 33 है। इनके नाम हैं—

(1) गर्व, (2) ग्लानि,
(3) मद, (4) मोह,
(5) मरण, (6) मति,
(7) श्रम, (8) शंका,
(9) स्वप्न, (10) स्मृति,
(11) हर्ष, (12) धृति,
(13) निद्रा, (14) निर्वेद,
(15) असूया (ईर्ष्या का भाव), (16) अपस्मार (आवेश, आवेग से हृदय-दौर्बल्य),
(17) अवहित्थ (हर्ष, भय आदि को छिपाना), (18) अमर्ष (अपमान, निन्दा से चिढ़, असहिष्णुता),
(19) जाड्य (जड़ता), (20) चपलता,

Scanned with CamScanner

(21) चिन्ता,
(22) ब्रीड़ा (लज्जा),
(23) व्याधि,
(24) विबोध (नींद भगाकर जागना),
(25) वितर्क,
(26) विषाद,
(27) त्रास,
(28) दैन्य,
(29) आवेग,
(30) उग्रता,
(31) उत्सुकता,
(32) आलस,
(33) उन्माद।

संचारी भावों के संयोग से स्थायी भाव आता है। स्थायी भाव रस का बीज है। इसी से रस उत्पत्ति होती है। इसी रस से युक्त वाक्य काव्य है। रसहीन काव्य कविता नहीं है। वह पद्य या तुक के स्तर पर ही रह जाती है।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

कविता-शिक्षण की कौन-सी विधि अपनायी जाय ?

यह बात अध्यापक की योग्यता तथा क्षमता पर निर्भर करती है कि कक्षा में वह किस प्रणाली का प्रयोग करे। सफल अध्यापक विषय और कक्षा के अनुकूल किसी भी उचित प्रणाली को अपना सकता है—लेकिन वह कविता के प्रमुख उद्देश्यों में बाधक न हो। प्रणाली को चुनने के पश्चात् कविता के शिक्षण का प्रश्न रह जाता है। कविता को किसी भी विधि में बाँधकर नहीं पढ़ाया जा सकता। फिर भी पाठन-क्रिया की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का समावेश तो होता ही है। इनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है—

प्रस्तावना—इसमें विद्यार्थी के पूर्व-ज्ञान के आधार पर विषय का परिचय होना चाहिए। प्रस्तावना विषय से सम्बन्धित आगामी उद्देश्यों की ओर अग्रसर होती हुई हो। इसका अर्थ बालक को विषय के प्रति आकृष्ट करना तथा विषयानुकूल वातावरण का निर्माण करना है। प्रस्तावना छात्रों को उद्दीप्त करने वाली होनी चाहिए।

प्रस्तावना के उपरान्त स्पष्ट तथा कक्षा के लिए उपयोगी शब्दों में यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि अध्यापक क्या पढ़ने जा रहा है। इसे ही उद्देश्य-कथन कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण—जब बालक में नए ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता जाग्रत हो जाती है, तब अध्यापक को उस समय से लाभ उठाकर नवीन पाठ को प्रस्तुत करना चाहिए। मूल पाठ की पाठ्योपस्थापना के लिए बालकों में कवि के हृदय में विद्यमान अनुभूति को जाग्रत करने के लिए अध्यापक को आदर्श कविता-पाठ करना चाहिए। अध्यापक के आदर्श वाचन के पश्चात् कतिपय छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाना अच्छा रहेगा।

बोध परीक्षा—बालक के अवधान को केन्द्रित रखने के लिए तथा कविता-पाठ और मौन पाठ की जानकारी की जाँच करने के लिए उनसे बोध-परीक्षा विषयक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। बोध-परीक्षा के प्रश्न पूछना अनिवार्य नहीं है।

काठिन्य-निवारण—कविता में कुछ स्थल या शब्द ऐसे हो सकते हैं जो छात्रों की समझ के बाहर हों। अतः छात्रों की कठिनाइयों को अर्थ कथन, पदच्छेद, विलोम कथन, पर्याय कथन, उदाहरण, अभिनय आदि द्वारा दूर कर देना चाहिए। युक्तियाँ विषयानुसार ही हों। प्रयोग कथन उदाहरण पद्यात्मक हो तो अच्छा है।

सस्वर पाठ—काठिन्य-निवारण के उपरान्त छात्रों द्वारा सस्वर पाठ कराया जाना चाहिए। कविता पाठों में अनुभूति की प्रधानता के कारण मौन वाचन उपयोगी नहीं होता। अतः अनुभूति जाग्रत करने के लिए समुचित रूप में भाव-भंगिमाओं के साथ कविता पढ़वाई जाए।

भाव-विश्लेषण—छात्रों को क्रियाशील बनाए रखने, भावों तथा सूक्ष्म अनुभूतियों को स्पष्ट करने एवं बालकों को रसानुभूति कराने के लिए उनसे यथा-योग्य प्रश्न पूछने चाहिए, जिससे कविता के भाव बालकों को पूर्णतया स्पष्ट हो जाएँ और वे काव्यानन्द प्राप्त कर सकें। रसास्वादन के अवसर पर अन्यान्य कवियों के समान भावाभिव्यंजक उद्धरण आना स्वाभाविक ही नहीं, अत्यन्त वांछनीय है। इनके बिना कक्षा से रसास्वादन के अनुकूल वातावरण नहीं बन पाता है।

आदर्श पाठ—इसके उपरान्त अध्यापक को पुनः आदर्श पाठ करना चाहिए। अध्यापक को लय सहित (राग सहित नहीं) छन्दों के अनुसार स्वर के आरोह-अवरोह के साथ भावयुक्त वाचन करना चाहिए। भाव-भंगी इतनी स्वाभाविक और सजीव हो कि कविता-पाठ के समय ही विद्यार्थी कविता के भावों में डूबने लग जाएँ।

Scanned with CamScanner

अनुकरण वाचन—इसके उपरान्त विद्यार्थियों के अनुकरण पाठ करवाना चाहिए, जिससे बालकों को छन्द, भावों के अनुसार उचित आरोह-अवरोह और भाव-भंगिमाओं के साथ शुद्ध पाठ का अभ्यास पड़े। यहाँ पर उनके वाचन सम्बन्धी दोष भी दूर कर दिये जाने चाहिए।

पुनरावृत्ति—पठित विषय से प्राप्त की हुई जानकारी का ज्ञान करने के लिए एवं बालकों को पूर्ण कविता के भावों, रसों तथा विशेषताओं से भिज्ञ कराने के लिए पाठ की पुनरावृत्ति की जा सकती है, जिससे समस्त पाठ शृंखलाबद्ध हो जाने से कविता-पाठ अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बन सके। पुनरावृत्ति से पूर्व सम्पूर्ण पाठ का सस्वर वाचन भी कराया जा सकता है। पुनरावृत्ति सभी पाठों में अनिवार्य नहीं है। इसके स्थान पर आत्मीकरण अथवा मूल्यांकन कराया जा सकता है।

मूल्यांकन—काव्य-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हुई या नहीं, इसकी जाँच के लिए कुछ प्रयास करना चाहिए। प्रश्नों, अभ्यासों, कथनों आदि के माध्यम से मूल्यांकन किया जा सकता है। पुनरावृत्ति और मूल्यांकन में से एक ही सोपान रखना ठीक है। आजकल मूल्यांकन की ओर लोगों का अधिक झुकाव है।

गृह-कार्य—गृह-कार्य में अर्जित ज्ञान का व्यवहारात्मक प्रयोग करा लेना चाहिए, क्योंकि इससे बालक को अपने भावों तथा मतों को प्रकट करने का अवसर मिलता है। साथ ही प्रयोगात्मक कार्य अधिक स्थायी और प्रभावशाली होता है।

कविता-पाठ के अध्ययन में निम्नलिखित बातों का सदैव ध्यान रखना चाहिए—

1. बेसुरे तथा अशुद्ध उच्चारण वाले बालकों से कविता नहीं पढ़वानी चाहिए। यदि अध्यापक स्वयं बेसुरा हो तो उसे आदर्श पाठ स्वयं न करके सुस्वर बालकों से कराना चाहिए।
2. कविता-शिक्षण के समय श्यामपट का प्रयोग यथासम्भव कम करना चाहिए।
3. प्रश्नोत्तर विधि का यथासम्भव कम प्रयोग हो और जो हो भी, वह काव्यगत भाषा-सौन्दर्य तथा भाव-सौन्दर्य का परिचय एवं रसमग्न कराने में सहायक हो।
4. काव्य-पाठ में चित्र आदि न दिखाकर कल्पना को उत्तेजित करना चाहिए।
5. व्याकरण का विश्लेषण कविता-पाठ में कम-से-कम होना चाहिए।

जहाँ तक हो सके, कविता के उद्देश्यों की पूर्ति का ध्यान रखना चाहिए। बहुत कुछ अध्यापक पर निर्भर है कि वह कक्षा में कविता के योग्य वातावरण उत्पन्न करे तथा रसानुभूति का आस्वादन कराने के लिए प्रयत्न करे। इसके लिए वह सोपानों के बन्धनों से मुक्त भी हो सकता है। सफल अध्यापक के लिए वही श्रेष्ठ विधि तथा प्रणाली है जिसके द्वारा वह अधिक-से-अधिक बालकों को कवि के भावों तक पहुँचा दे।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

कविता-शिक्षण के उद्देश्य

कविता कल्पना और मनोवेगों द्वारा जीवन की व्याख्या करती है। उसकी वृत्ति रागात्मक होती है। वह मानव, प्रकृति या जड़—तीनों से भाव ग्रहण कर मार्मिक हृदयगामी रूप से सत्य और आनन्द की व्याख्या का प्रयत्न करती है। अतः कविता का लक्ष्य काल्पनिक और भाव-जगत् में विचरण करने का साधन प्रस्तुत करता है। कविता उपभोग की वस्तु है, ज्ञानवर्द्धन की नहीं; अतः कविता पढ़ाते समय अत्यधिक व्याख्या, शब्दार्थ, व्याकरण आदि का स्पष्टीकरण करने की विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे रसानुभूति में व्याघात उपस्थित होता है लेकिन कहीं-कहीं कविता के अर्थ को समझने एवं रसानुभूति के लिए अर्थ का बताना आवश्यक हो जाता है, परन्तु केवल उन्हीं शब्दों का स्पष्टीकरण करना चाहिए, जिनके द्वारा रसानुभूति एवं आनन्दोपलब्धि में बाधा उपस्थित होती है। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि टी. एस. इलियट के अनुसार तो कविता को बिना अच्छी तरह समझे हुए भी उसका आनन्द लिया जा सकता है।

कविता हृदय की सीधी-सच्ची अभिव्यक्ति है, उसमें हृदय का स्रोत फूटकर बाहर निकलना चाहता है, अतः उसे निर्बाध गति से ही पढ़ना चाहिए अन्यथा उसका समस्त सौन्दर्य नष्ट हो जायेगा। कविता हृदय की वस्तु है, अनुभूति की अभिव्यक्ति है। अतएव कविता का उद्देश्य मानव-हृदय की रागात्मक वृत्तियों का संशोधन, संस्कार और उसकी सद्वृत्तियों का उद्‌बोधन है। उसके उद्देश्य हैं—कवि भावनाओं और अनुभूतियों का छात्रों को यथार्थ रूप में अनुभव कराना तथा आस्वादन कराना। प्रारम्भिक कक्षा तक अध्यापक को सदैव इसी उद्देश्य पर दृष्टि रखनी चाहिए। अस्तु, कविता-शिक्षण के समय ऐसा वातावरण उपस्थित करना आवश्यक है, जिसमें छात्र का हृदय तन्मय होकर कवि के भावों का अनुगमन एवं अनुभव कर सके।

कविता हमारे प्राणों का संगीत है। अतः कविता का पाठ इस प्रकार मधुर, सस्वर, प्रभावपूर्ण हो जिससे छात्र कविता का संगीत-माधुर्य, उसकी काल्पनिक उड़ान, उसके असाधारण संवेगात्मक वातावरण का अनुभव कर सकें। कवि और कक्षा में तादात्म्य कर देना ही सफल अध्यापक की विशेषता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कविता-शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य पर ध्यान देना अध्यापक के लिए आवश्यक है—

1. लय, ताल और भाव के अनुसार कविता पाठ करना।
2. कविता में रुचि उत्पन्न कर काव्य-रचना के लिए प्रोत्साहित करना।
3. सहानुभूति क्षेत्र के विस्तार तथा उदात्त भावों के उत्पादन एवं संवर्द्धन द्वारा उन्हें सन्तुलित एवं लोक-कल्याणकारी चरित्र के निर्माण की प्रेरणा देना।
4. कवि के भावों एवं विचारों के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कराके अलौकिक आनन्द की अनुभूति कराना।

Scanned with CamScanner

5. छात्रों में कवि के भावों, कल्पनाओं तथा अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य की परख की योग्यता उत्पन्न करना।

6. भाव-भंगिमाओं तथा स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ कविता-पाठ का अभ्यास कराना।

7. विविध कविता-शैलियों का परिचय कराके उन्हें अपने योग्य शैली के विकास में सहायता देना।

8. साहित्य के साथ परिचय कराते हुए उसके बालकों की ऐसी स्थायी रुचि का विकास करना जिससे उनमें स्वाध्यायशीलता उत्पन्न हो।

उपर्युक्त उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए ही कविता-शिक्षण होना चाहिए। कविता का निर्वाचन छात्रों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित हो। वह उनके अनुभवों से परे की बात न हो। उनकी व्यक्त अनुभूतियाँ ऐसी हों, जिन्हें बालक ने अपने जीवन में अनुभव किया हो।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

कविता-शिक्षण की विधियाँ

निश्चित उद्देश्यों के आधार पर कविता-शिक्षण की निम्नलिखित प्रणालियाँ द्रष्टव्य हैं—

1. गीत तथा अभिनय प्रणाली,
2. अर्थ-बोध-प्रणाली,
3. व्याख्या-प्रणाली,
4. खण्डान्वय-प्रणाली।
5. व्यास-प्रणाली,
6. तुलना-प्रणाली,
7. समीक्षा-प्रणाली,

Scanned with CamScanner

(1) गीत तथा अभिनय प्रणाली—यह प्रणाली प्रारम्भिक कक्षाओं में बाल-गीतों के लिए प्रयोग में लाई जाती है। कुछ गीतों के अर्थ का कोई महत्त्व नहीं होता है। केवल बालकों को सस्वर बनाना, ताल में लाना और संगीत से परिचय कराना ही इनका उद्देश्य है।

अभिनय-प्रधान पदों में बालक उचित अंग-संचालन के द्वारा भाव व्यक्त करना भी सीख जाता है। बालकों को पद्य के आधार पर ही सामूहिक अभिनय सिखाना चाहिए।

इस प्रकार के अभिनय द्वारा बालकों की कविताओं के प्रति रुचि उत्पन्न होगी, फुर्ती आयेगी, कविताएँ भी कण्ठस्थ हो जायेंगी और खेल-खेल में ही उचित अंग-संचालन द्वारा भाव व्यक्त करने की विधि भी आ जायेगी।

(2) अर्थ-बोध प्रणाली—इस प्रणाली में शिक्षक स्वयं कविता का अर्थ बताता चलता है। बालक की रुचि तथा रसानुभूति का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। अतः यह प्रणाली दूषित और त्याज्य है।

(3) व्याख्या प्रणाली—इस प्रणाली में अध्यापक एक-एक पद लेकर उसका अर्थ करता हुआ कवि का दार्शनिक मत, प्रवृत्ति, उसकी रचना-शैली, परिस्थिति, कविता की भाषा, अलंकार भाव, रस आदि की व्याख्या करके पद का अर्थ स्पष्ट करता चलता है। यदि उसमें कोई अन्तर्कथा होती है तो उसका भी ज्ञान करा देता है। इस प्रणाली का प्रयोग केवल माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में ही होना चाहिए।

(4) खण्डान्वय प्रणाली—इसको प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते हैं। यह प्रणाली उन पदों के पढ़ाने के काम आती है, जिनमें विशेषणों की भरमार हो, भावों की भीड़ हो, घटनाओं की घटा हो और एक-एक बात का अर्थ स्पष्ट किये बिना स्पष्टता न आती हो। इस प्रणाली का प्रयोग केवल वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पद्यों के पढ़ाने में ही किया जाता है।

(5) व्यास प्रणाली—यह मुख्यतः उच्च श्रेणी की भाव-प्रधान कविताओं के पढ़ाने के लिए प्रयोग की जाती है। इस प्रणाली में पद को भाषा और भाव, दोनों की दृष्टि से परखा जाता है। भाव के स्पष्टीकरण के लिए अनेक उदाहरणों, दृष्टान्तों, सूक्तियों तथा कथाओं का प्रयोग कर अध्यापक व्याख्या करता है। भाषा की दृष्टि से विचार करते समय अध्यापक एक-एक शब्द, उसकी उपादेयता, शब्द-बल, दोष तथा वाक्य-विन्यास का स्पष्टीकरण करता चलता है। अतः इस प्रणाली में अध्यापक को विषय का गहन ज्ञान अपेक्षित है। बालकों की रुचि, उत्साह तथा उल्लास को बनाये रखने के लिए अध्यापक को कुशल अभिनेता भी होना चाहिए। भावात्मक कविताओं में इसी प्रणाली का प्रयोग उत्तम माना जाता है।

(6) तुलनात्मक प्रणाली—इस प्रणाली में सम-भाषा कवि, भिन्न-भाषा कवि की तुलना तथा भाव-तुलना द्वारा साम्य और असाम्य—दोनों का विवेचन किया जाता है। साथ ही एक ही कवि अपने बनाये हुए विभिन्न काव्यों में एक ही बात कई भावों या उद्देश्यों से कहता है। ऐसे भावों या वर्णनों को तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विवेचन तथा तर्क-शक्ति का विकास होता है, ज्ञान का विस्तार होता है। कवि के उद्देश्यों, कविता के विभिन्न स्वरूपों तथा कवि-शैली का भी परिज्ञान हो जाता है।

(7) समीक्षा प्रणाली—इस प्रणाली द्वारा अध्यापक 'प्रश्नोत्तर विधि' का आश्रय लेकर कवि की समीक्षा करता है तथा विद्यार्थियों को आलोचना के सिद्धान्त बताकर सहायक पुस्तकों की सहायता से समष्टि रूप से एक कवि की रचनाओं अथवा कविताओं की समीक्षा करने को कहता है। अतः यह प्रणाली उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी हो सकती है।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

पद्य शिक्षण/कविता शिक्षण

कविता क्या है ?

मानव चेतना-सम्पन्न तथा संवेदनशील प्राणी है। उसका मन अपने शरीर पर पड़ने वाले सुख-दुःख, प्रेम, दया, क्रोध एवं आशा से चलायमान रहता है और प्रकृति के प्रतिपल परिवर्तन होने वाले सौम्य, मनोरम, विकराल रूपों से भी भाव ग्रहण करता चलता है। साथ ही वाणी का वरदान भी मानव को चिरकाल से प्राप्त है। अतः प्रकृति के इन नाना रूपों से उद्‌भूत मनोविकारों तथा जीवन की अन्याय परिस्थितियों के सम्बन्ध में अपनी वाणी द्वारा मानव अपने अनुभवों को व्यक्त कर सन्तोष, तृप्ति और आनन्द की प्राप्ति करता रहा है। मनुष्य की इसी प्रवृत्ति की प्रेरणा से ज्ञान और आनन्द के उस भण्डार का सृजन, संचय एवं संवर्द्धन होता रहा है, जिसे साहित्य कहते हैं।

साहित्य का ही एक अंग कविता है जो मानवीय भावों का सहज व्यक्तिकरण है, अथवा सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था का स्वर साधना के उपयुक्त पदों में प्रकाशन ही कविता है। कविता में भाव-तत्त्व, कल्पना-तत्त्व और बुद्धि-तत्त्व—तीनों का सम्मिश्रण होता है। काव्य मनुष्य को उस धरातल पर ले जाता है जहाँ वह 'स्व' पर 'पर' की भावना से रहित होकर अपने को केवल मनुष्य अनुभव करता है। हृदय की इसी मुक्तावस्था के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती है, वही कविता है।

जिस प्रकार जीवित व्यक्ति नहीं कह सकता कि जीवन क्या है और भक्त विश्लेषण नहीं कर सकता कि ईश्वर क्या है, उसी प्रकार काव्य की भी कोई निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती। फिर भी इतना अवश्य है कि कविता आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जो छन्दोबद्ध तथा नियमित गति में होने के कारण ताल और लय पर चलती है। इस कारण कविता की शिक्षण-पद्धति का विधान गद्य-शिक्षण की पद्धति से भिन्न होता है। गद्य और पद्य में एक अन्तर है—छन्दोबद्धता का, दूसरा अन्तर है—अभिव्यक्ति का। पद्य द्वारा आत्माभिव्यक्ति होती है और गद्य किसी कार्य को सम्पन्न करने का साधन है। पद्य में भावों एवं संवेदनाओं की अनुभूति होती है, गद्य में तर्कों का सहारा लिया जाता है। एक हृदय की वस्तु है, दूसरी मस्तिष्क की। तीसरा अन्तर यह है कि गद्य में जब अभिव्यक्ति होती है तो विवरणात्मकता प्रमुख होती है, पद्य में संकेतात्मकता। अतः काव्य-शिक्षण की विधि का गद्य-शिक्षण की विधि से भिन्न होना स्वाभाविक है। काव्य-शिक्षण की पद्धति पर विचार करने से पूर्व हिन्दी काव्य-साहित्य के विकास का संक्षिप्त विवरण आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

काव्य-विभाजन

संस्कृत के आचार्यों ने काव्य के भेदों पर भी विचार किया है। उन्होंने काव्य-विभाजन को छन्द के आधार पर किया है। छन्द के आधार पर काव्य दो प्रकार का है—

(1) गद्य, (2) पद्य।

यदि गद्य में रमणीयता, रसात्मकता और ध्वन्यात्मकता है तो वह भी काव्य के समान आनन्ददायी है। कादम्बरी में यंत्र-तत्र काव्य के गुण विद्यमान हैं। यद्यपि यह गद्य का उत्कृष्ट ग्रन्थ है। हिन्दी में गद्यकाव्य की परम्परा से सभी परिचित हैं। स्वरूप के आधार पर काव्य के निम्नलिखित भेद हैं—

(1) महाकाव्य,
(2) रूपक,
(3) आख्यायिका,
(4) कथा,
(5) मुक्तक।

विषय के आधार पर काव्य के चार भेद किये गये हैं—

(1) ख्यातवृत्त,
(2) कल्पित,
(3) कलाश्रित,
(4) शास्त्राश्रित।

इन्द्रियों की ग्राह्यता के आधार पर काव्य के दो भेद किये गये हैं—

(1) दृश्य काव्य और
(2) श्रव्य काव्य।

हिन्दी में काव्य का यह विभाजन सामान्य रूप से ही समझना चाहिए। हिन्दी काव्य की परम्परा में इस विभाजन को सदैव आधार नहीं माना गया है।

Scanned with CamScanner

सैमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III: साहित्यिक विधाओं एवं व्याकरण शिक्षण

1. कविता शिक्षण

a. कविता क्या है
b. कविता की रसात्मकता
c. हिन्दी में काव्य - साहित्य का विकास
d. काव्य विभाजन
e. कविताओं के चयन के लिए कुछ संकेत
f. कविता - शिक्षण के उद्देश्य
g. रसानुभूति
h. कविता - शिक्षण की विधियाँ
i. कविता - शिक्षण
j. कविता - शिक्षण की कौन - कौन सी विधि अपायी जाय

By -:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

रसानुभूति

कविता पढ़ाने का लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं है। कविता के अध्ययन का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति है। कविता-पाठ में शिक्षक और छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करते हैं और उसकी उपलब्धि ही पाठ का ध्येय होता है। कविता-पाठ में अर्थ और व्याख्या आदि भाषा सम्बन्धी कार्य भी होता है और घटना-व्यापार, वैज्ञानिक सत्य, पशु-पक्षी स्वभाव, अन्तःकथा आदि सूचना देने की भी आवश्यकता प्रायः हो जाती है, परन्तु इतना ही कर देना कविता पढ़ाना नहीं है। वास्तविक कविता-शिक्षण इसके उपरान्त ही प्रारम्भ होता है। शिक्षक को चाहिये कि व्याख्या सम्बन्धी आवश्यक कार्य में यथोचित समय लगाकर रसानुभूति की ओर उन्मुख हो जाये।[1]

रसानुभूति के स्वरूप को समझने के लिए हम उसे तीन भागों में बाँट सकते हैं—अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भावों का सौन्दर्य और विचारों का सौन्दर्य। अभिव्यक्ति में नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य होता है। अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेरक्षा, रूपक आदि के सहारे वस्तु-व्यापारों के चित्र अभिव्यक्ति के अन्तर्गत हैं, भाव-सौन्दर्य में लज्जा, शोक, उत्साह, वात्सल्य आदि के वर्णन आते हैं। सूर की बाल-लीला, हल्दी घाटी का युद्ध, सुदामा-चरित आदि भाव-प्रधान कविताएँ हैं। विचारों के सौन्दर्य वाली कविताएँ प्रायः उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त होती हैं। इन कक्षाओं के लिए उपयुक्त नीति साहित्य की रचनाओं में विचारों का सौन्दर्य मिलता है। यों तो सभी कविताओं में सौन्दर्य के ये तत्त्व कुछ-न-कुछ मात्रा में होते हैं, परन्तु प्रधानता प्रायः किसी एक ही तत्त्व की होती है। शिक्षकों को चाहिए कि इसी प्रधान तत्त्व की ओर बालकों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करें।

रसानुभूति हेतु अध्यापक को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(क) रसास्वादन कर सकने की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग प्रकार की और अलग-अलग मात्रा में होती है। अतः प्रत्येक बालक से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा न करनी चाहिए।

(ख) शिक्षण और अभ्यास द्वारा यह योग्यता बढ़ाई जा सकती है।

(ग) रचना के प्रति इतना कुतूहल जाग्रत कर दिया जाये कि उसे सुनने के लिए बालक उत्सुक हो जायें।

(घ) कविता का प्रथम परिचय प्रभावोत्पादक हो, अर्थात् पहली बार का सुपाठ मार्मिक हो।

---

1. रसानुभूति की यह सामग्री राजकीय अध्यापन विज्ञान संस्थान द्वारा प्रकाशित सामग्री पर आधिरित है।

Scanned with CamScanner

(ङ) कठिन शब्द और दुरूह विचार तथा अत्यधिक विश्लेषण रसास्वादन में बाधा डालते हैं।

(च) उचित प्रकार के प्रश्नों, व्याख्या, तुलना, विरोध आदि से विचारों, भावों, कल्पनाओं और शब्द-चित्रों को व्यवस्थित किया जाये।

(छ) कक्षागृह का वातावरण आनन्दमय हो। बातचीत का ढंग अकृत्रिम और साहचर्यपूर्ण हो। संगीतपूर्ण पंक्तियों के आनन्द का प्रवाह निर्बाध होना चाहिए।

(ज) सरस पंक्तियाँ बालकों से दुहराई जायें। कविता की तुकान्त योजना, पंक्ति का मध्यवर्ती अन्त्यानुप्रास, वर्णवृत्तों के गुर-लघु-क्रम के संगीत का रसास्वादन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(झ) अच्छी-अच्छी रचनाएँ, बालकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार कंठस्थ कराई जायें और समय-समय पर उनका सुपाठ किया जाये। अन्त्याक्षरी इसका एक अच्छा साधन है।

(ञ) अभिव्यक्ति होने से रसानुभूति पुष्ट होती है। समालोचना, विचार-विनिमय, सुपाठ, व्याख्या, चित्र बनाना, पद्य-रचना करना, तुकांत शब्द ढूँढ़ना, उपयुक्त उपमान अथवा प्रयोग देना आदि अभिव्यक्ति के प्रमुख साधन हैं।

उपर्युक्त बातों के आधार पर कविता-पाठ का संचालन गद्य के पाठ से भिन्न होगा। प्रथम परिचय को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए आवश्यक होगा कि सर्वप्रथम कविता अच्छी तरह पढ़कर सुनाई जाये। कविता प्रायः कान का ही विषय है, आँख का नहीं। वह नाद है, लिपिबद्ध विचारधारा नहीं। कभी-कभी कुछ प्रारम्भिक वक्तव्य अथवा बातचीत की आवश्यकता हो सकती है, परन्तु वह भी नितान्त आवश्यक ही होनी चाहिए। मौन पाठ से इसका पढ़ाना प्रारम्भ नहीं हो सकता। पाठ संचालन के निम्न सोपान मुख्य होंगे—

शिक्षक द्वारा सस्वर सुपाठ, केन्द्रीय भावग्रहण की परीक्षा, बालकों की कठिनाइयाँ दूर करना, सूक्ष्म विश्लेषण अथवा सौन्दर्यानुभूति की अभिवृद्धि, आस्वादन की अभिव्यक्ति, जैसे—बालकों द्वारा सुपाठ, सरल विवेचन, कंठ करना।

गद्य के पाठ से कविता का पाठ एक और प्रकार से भिन्न होगा। गद्य पाठ को हम सुविधापूर्वक अनुच्छेदों में विभक्त करके पढ़ाते हैं। कविता में पूरे पाठ की यथासम्भव एक ही अन्विति रखी जाती है। लम्बी कविताओं को कई स्वतन्त्र अन्वितियों में विभक्त करने की आवश्यकता होगी। इन सोपानों के सम्बन्ध में मुख्य-मुख्य बातें नीचे दी जा रही हैं—

शिक्षक का सस्वर पाठ—प्रथम परिचय-पाठ इस प्रकार से होना चाहिए कि भाव और अर्थ की अभिव्यक्ति के साथ-साथ नाद-सौन्दर्य भी प्रकट हो जाये और नाट्य तथा संगीत का दुष्प्रभाव न आने पाये। कविता सुपाठ का अर्थ गाना नहीं है। भावपुष्टि और अर्थद्योतन के लिए जितने संगीत की आवश्यकता है, उतना ही सहयोग उससे लेना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संगीत अथवा नाट्य से काव्य दब न जाये। अतः सूर के पद पक्के गानों की भाँति न गाये जायें और न तान खींची जाये। कविता के सुपाठ में संगीत का जो अर्थ है, वह आगे स्पष्ट किया गया है। कविता सुपाठ के लिए निम्न परामर्श शिक्षक को उपयोगी सिद्ध होंगे—

1. व्यंजन तथा स्वर वर्णों का उच्चारण पूर्ण, स्पष्ट और शुद्ध हो। ब्रज और अवधी की रचनाओं में शिक्षक को अधिक सचेत रहने की आवश्यकता होगी। उनमें 'श', 'ण' के स्थान पर क्रमशः 'स' और 'न' होता है और 'ङ' तथा 'ल' के स्थान पर कहीं-कहीं 'र' हो जाता है। द्वित्व वर्णों के आधे वर्ण का भी कहीं-न-कहीं लोप हो जाता है—चित (चित्त), वित (वित्त) और अन्तिम स्वरों में अन्तर होता है,

Scanned with CamScanner

उदाहरणार्थ, 'गोरा' ब्रजभाषा में 'गोरौं' और अवधी में 'गोर' हो जाता है। ऐसे शब्दों के उच्चारण उक्त बोलियों के अनुकूल तथा स्वाभाविक होने चाहिए—

''गोर सरीर भूमि भलि भ्राजा, भाल बिसाल त्रिपुंड विराजा।'' (तुलसी)

''गोरौ गोरौ मुख आज ओरौ सौ बिलानौ जातु।'' (देव)

कवित्त और घनाक्षरी के स्वरों को छोटा करके पढ़ने की दूषित प्रथा भी कहीं-कहीं मिलती है। "भीषण भयानक पुकार्‌यो रन भूमि आनि" को "विषम भयानक पुकार रन भुमि अनि" की भाँति पढ़ने से संगीत और भाव दोनों नष्ट हो जाते हैं।

2. संगीत तत्त्वों को स्पष्ट करते हुए पढ़ना चाहिए। हिन्दी रचनाओं में जिन विधानों से संगीत उत्पन्न होता है, उनका वर्णन सूक्ष्म विश्लेषण शीर्षक के अन्तर्गत आगे किया गया है।

3. अतुकांत तथा असमान मात्राओं के चरणों वाले छन्दों में भी इन्हीं संगीत के तत्त्वों को प्रधानता देते हुए उचित विराम स्थलों पर रुकना चाहिए, प्रत्येक पंक्ति के अंत में अनिवार्य रूप से नहीं।

4. शिक्षक की वाणी, भावभंगी आदि प्रत्येक बात कविता के रस के अनुकूल होनी चाहिए। वीर रस की वाणी में उत्साह, रौद्र में ओज, करुण रस में शोक और शान्त रस में गाम्भीर्य अपेक्षित है।

5. गति की दृष्टि से छन्दों में जो विश्राम होते हैं, उन्हें यति कहते हैं। परन्तु यति स्थान पर ही अर्थ विश्राम होना अनिवार्य नहीं है। इन अर्थ विश्रामों पर भी रुकना आवश्यक है। परन्तु यदि यति पर रुकने से अर्थ ग्रहण में बाधा पड़ती हो, तो यथासम्भव यति की रक्षा करते हुए, इन छन्द विश्रामों (यति) पर न रुकना चाहिए। तात्पर्य यह है कि पढ़ने में अर्थाभिव्यक्ति की रक्षा करना अभीष्ट है।

निम्न पंक्ति में 'घर-घर' के बीच में विराम आवश्यक है यद्यपि छन्द की यति यहाँ नहीं आती—

''गीत गा रही है चक्की पर, किसी-किसी घर, घर की रानी''

इसी प्रकार गुप्त जी का यह छन्द लीजिए—

''संध्या हो रही है।/नील नभ में/शरद के
शुभ्र धन तुल्य,/हरे वन में,/शिविर के
स्वर्ण के कलश पर,/अस्तंगत भानुका
अरुण प्रकाश पड़,/झलक रहा है यों,
छलक रहा हो,/भरा भीतर का रंग ज्यों।"

इससे चरण के अन्त में अनिवार्य रूप से विश्राम न होकर (/) अंकित स्थानों पर होगा।

रसानुभूति के प्रथम स्तर की जाँच—बालकों को कविता सुना चुकने के उपरान्त उसकी जाँच आवश्यक है। इसका प्रधान उद्देश्य यह जानने के लिए होगा कि बालकों की अनुभूति किस सीमा तक हुई है और शिक्षक को किस दिशा में और कितना कार्य करना है। साधारण रूप से यह मोटी-मोटी बातों से चलकर सूक्ष्म सौन्दर्य की ओर बढ़ना चाहिए। अतः पहले दो-चार प्रश्न कविता के सामान्य सौन्दर्य के आस्वादन के सम्बन्ध में ही होंगे। इसी स्थल पर बालकों की कठिनाइयाँ भी शिक्षक को ज्ञात हो जायेंगी।

बालकों की कठिनाइयाँ—कठिन शब्दों के अर्थ साहित्यिक परम्पराएँ तथा रूढ़ियाँ, अन्तःकथाएँ, तद्भव शब्दों के तत्सम रूप ब्रज और अवधी शब्दों के खड़ी बोली के रूप आदि बातें इन कठिनाइयों के अन्तर्गत आती हैं। यहाँ शिक्षक को कभी-कभी अपना वक्तव्य देने की आवश्यकता भी हो जाती है। जो बातें बालक न जानते हों, उन्हें उनसे निकलवाने की चेष्टा न करनी चाहिए और जो शिक्षक को बतानी ही हैं, उन्हें बताने में उसे संकोच और देर भी न करनी चाहिए। पीछे कहा जा चुका है कि काव्य से भी अज्ञात रूप में भाषा-ज्ञान होता है, फिर भी भाषा सिखाना काव्य का उद्देश्य नहीं। अतः शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कराने की न आवश्यकता है और न वांछनीय ही है। श्यामपट्ट पर शब्दार्थ लिखने

Scanned with CamScanner

से बालकों का ध्यान इस ओर अनावश्यक रूप से आकृष्ट हो जाता है। सौन्दर्यवर्धन तथा उपयुक्तता की दृष्टि से लाक्षणिक तथा व्यंजनापूर्ण पदों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

सूक्ष्म विश्लेषण तथा द्वितीय स्तर पर रसानुभूति—पाठन विधि को समझने की दृष्टि से ये सोपान अलग कर दिये गये हैं। व्यवहार में उपर्युक्त दो सोपानों के साथ इसका अविच्छिन्न सम्बन्ध रहेगा और ये तीनों एक ही अन्विति के अंग होंगे। इसमें शिक्षक को ऐसे प्रश्नों की योजना करनी चाहिए, जिनसे अस्पष्ट सौन्दर्य स्पष्ट हो जाये और साधारण रूप से यदि उत्तर शृंखलाबद्ध कर दिये जायें तो कविता की सुसम्बद्ध व्याख्या-सी बन जाये। प्रारम्भ में बालक, कवि के शब्दों में ही जहाँ सम्भव हो, उत्तर दे सकते हैं। एक उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट किया जा रहा है—

मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
मो सौं कहत मोल कौ लीनौ, तू जसुमति कब जायौ॥
गोरे नन्द जसोदा गोरी, तुब कत स्याम सरीर।
तारी दै दै हंसत ग्वाल सब, सिखै देत बलवीर॥
तू मोही को मारन सीखी दाउहिं कबहु न खीझे।
मोहन को मुख रिस समेत लखित जसुमति पुनि-पुनि रीझे॥
सुनहु स्याम बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूरदास मोंहि गोधन की सों, हों माता तू पूत॥

इस पद पर प्रश्न कुछ इस प्रकार हो सकते हैं—

इस पद में मोहन क्या शिकायत कर रहे हैं ? दाऊ कौन थे ? उनका पूरा नाम क्या था ? दाऊ क्या कह-कहकर कृष्ण को चिढ़ाते थे ? नन्द यशोदा के पुत्र न होने का क्या कारण बलदाऊ ने दिया था ? बालक से वह पंक्ति पढ़ने को कहा जाये)। इस कारण में चिढ़ की क्या बात थी ? चिढ़ाने में और कौन सम्मिलित थे ? वे चिढ़ाने के लिए क्या करते थे ? उनकी शिकायत कृष्ण ने क्यों नहीं की ? (स्पर्धा भाई से ही होती है)। यशोदा ने तब क्या कहा ? (कुछ नहीं)। तब कृष्ण ने यशोदा पर अपना रोष किस प्रकार प्रकट किया ? (बालक से वह पंक्ति पढ़ने को कहा जाये)। कृष्ण के मुख पर क्या भाव था ? उनके रोष युक्त मुख का यशोदा पर क्या प्रभाव पड़ा ? 'पुनि पुनि' शब्दों का क्या विशेष तात्पर्य है ? कृष्ण को मनाते हुए यशोदा ने बलभद्र के लिए क्या कहा ? गोधन की सौगन्ध खाकर यशोदा ने कृष्ण से क्या कहा ? कृष्ण पर इसका क्या प्रभाव पड़ा होगा।

इस प्रकार के प्रश्नों के साथ-साथ कविता की अन्य पंक्तियों की ओर बालकों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए। यह लालित्य भाव, अर्थ अथवा संगीत का हो सकता है। अलंकार, भाव, विभाव आदि के नाम देना न आवश्यक है और न सहायक ही। उन नामों से जिस प्रकार के सौंदर्य का तात्पर्य हो, उसी की अनुभूति कराना आवश्यक है। कविता का संगीत निम्न रूप का होता है—

(अ) चरण के अन्त में अनुप्रास।

(आ) चरण के बीच में पड़ने वाला तुकांत अनुप्रास, यथा—

"खरी दुपहरी हरी भरी फरी कुंज, मंजु, गुंज अलिपुंजन सौं 'देव' हियो हरि जात" इसका महत्व अन्त्यानुप्रास से भी अधिक है।

(इ) छेक अथवा वृत्यानुप्रास—

1. चारुचन्द्र की चंचल किरणें
2. सोरे नदनीर अरु सीतर है गहीर छांह,
   सोवें परे पथिक पुकारें पिकी करिजात।

Scanned with CamScanner

(ई) गुरु-लघु की एक ही निश्चित क्रम से आवृत्ति, जो वर्ग वृत्तों में गणों के एक ही क्रम में आने से स्पष्ट होती है।

। । । ऽ। । ऽ। । ऽ। ऽ ।।। ऽ ।। ऽ ।। ऽ । ऽ

दिवस का अवसान समीप था, गगन था कुछ लोहित हो चला।

(उ) यमक की भाँति शब्दों अथवा शब्द-खण्डों की आवृत्ति

कनक-कनक ते सौगुनी इत्यादि।

(ऊ) पंक्तियों की आवृत्ति—इससे भाववृद्धि के साथ-साथ संगीत का प्रभाव भी बढ़ता है। ये पंक्तियों टेक का रूप धारण करती हैं, जैसे—

नवयुग का सन्देश लिए शुभ प्रजातंत्र दिन है आया

('सुमन' की 'प्रजातंत्र' कविता)

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

('झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान)

(ए) ध्वन्यात्मक पद, यथा—

रुनित भृंग घंटावली, झरत दान मधुर नीर।
मंद मंद आवत चल्यी, कुंजर कुंज समीर॥

इसमें पहले चरण में घंटे की ध्वनि-सी सुनाई पड़ती है और तीसरे चरण को गति हाथी की चाल की भाँति मंद हो गई है।

सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति—रसानुभूति की प्रभविष्णुता बढ़ाने के लिए उसकी अभिव्यक्ति आवश्यक है। इस अभिव्यक्ति के निम्न साधन हैं—

बालकों द्वारा सुपाठ, ललित अंशों का चयन और लालित्य के मौखिक अथवा लिखित कारण देना भावार्थ लिखना, अप्रस्तुतों पर विचार करना विशेषण—विपर्यय, लाक्षणिक अथवा प्रतीकात्मक प्रयोगों की विशेषता बताना, तुकान्त शब्द देना इत्यादि इस अभिव्यक्ति में बालकों की अनुभूति की परीक्षा भी हो जायेगी। परन्तु यहाँ भी यह स्मरण रखना चाहिए कि पारिभाषिक शब्दों के नाम देने तक ही अभिव्यक्ति सीमित न रह जाये। वस्तव में अलंकार, लक्षणा, भाव-भेद, रस-भेद आदि के नाम इन बालकों को कम ही देना ठीक होगा। परन्तु उनके अन्तर्गत सौन्दर्य की अनुभूति की क्षमता इन बालकों में हो सकती है। बालकों पढ़ना सिखाने का कार्य अपने पढ़ने से कठिन है। परन्तु सहानुभूति और धैर्य के साथ काम करने से कठिनाई अवश्य कम हो जायेगी। बीच-बीच में आदर्श-पाठ इसमें सहायक होगा। पहले अच्छे बालकों से ही पढ़वाना चाहिए। भाव-भीरु बालकों से पढ़ने का आग्रह करना हितकर न होगा।

इसी प्रकार समभावात्मक पंक्तियाँ ढूँढ़ना, कंठ करना, अन्त्याक्षरी करना अथवा अन्य विधि से सस्वर सुपाठ करना (कवियों की वेशभूषा में) मौखिक अथवा लिखित विवेचन, तुलनात्मक विवेचन इत्यादि इन कक्षाओं में प्रारम्भ किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner